श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल, राजस्थान का उद्‌बोधन

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और पूर्व
प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री की जयंती

दिनांक – 02 अक्टूबर, 2020 **समय – दोपहरः 12. 00 बजे**

स्थान – राजभवन

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और पूर्व प्रधानमंत्री स्व.श्री लाल बहादुर शास्त्री जी की जयंती पर राजस्थान प्रदेशवासियों की ओर से मैं श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं। महात्मा गांधी का जीवन भारत ही नहीं पूरे विश्व और पूरी मानवता के लिए प्रेरणा का संदेश देता है।

महात्मा गांधी को उनके कार्यों ने उन्हें इतनी ऊंचाई प्रदान की हैं कि आज उनके जन्म के 150 वर्ष बाद भी हमें उनके आदर्शों से न केवल प्रेरणा मिल रही है बल्कि भावी पीढ़ी के लिए भी इसमें संदेश निहित हैं। गांधी जी ने स्वतंत्र भारत में अपने जीवन का बहुत कम समय व्यतीत किया। इसके बावजूद हम देखते हैं कि आज देश का विकास और विकास की संकल्पना उनके स्वदेशी ग्राम स्वराज्य और स्वावलंबन जैसे सिद्धान्तों के बिना अधूरी है।

महात्मा गांधी एक ऐसे व्यक्तित्व थे, जिनके सिद्धान्त देश, धर्म, भाषा, जाति, सम्प्रदाय और वर्ग सबसे ऊपर उठकर सम्पूर्ण मानवता के लिए उपयोगी और प्रासंगिक बने रहेंगे। अगर हम इतिहास पर नज़र ड़ालें तो विश्वभर में पिछली शताब्दी के दौरान साम्राज्यवाद के खिलाफ चले सभी आन्दोलनों में गांधी जी का आदर्श नजर आता है।

दक्षिण अफ्रीका में नेलसन मण्ड़ेला हों या अमरीका में मार्टिन लूथर किंग, फिलीस्तीन में यासर अराफात हों या पौलेण्ड के लेक वालेसर, सबने किसी न किसी रूप में गांधी जी को अपना प्रेरणा स्रोत माना। गांधीजी के विचारों और आचरण के साथ–साथ उनके सिद्धान्तों और अहिंसा में उनकी अटूट निष्ठा ने दुनिया के अनेक देशों में आन्दोलनों की दिशा ही बदल दी।

महात्मा गांधी द्वारा प्रारम्भ किया गया सत्याग्रह विश्वभर में असहमति और विरोध व्यक्त करने के लिए एक प्रमुख मार्ग बनकर सामने आया। अहिंसात्मक तरीके से भी विरोध किया जा सकता है और ब्रिटेन जैसी महाशक्ति को भारत ही नहीं कई देशों से अपने पैर खींचने पड़ सकते हैं, यह गांधीजी ने कर दिखाया।

आज का विश्व जिन बड़ी चुनौतियों से जूझ रहा है, उनके निराकरण का मार्ग भी गांधीजी के विचारों से खुलता है। कोरोना वैश्विक महामारी, पर्यावरण असंतुलन, आतंकवाद, चारित्रिक गिरावट और अविवेकपूर्ण तरीके से हो रहा विकास, वे चुनौतियां हैं, जिनका सामना पूरा संसार कर रहा है।

महात्मा गांधी ने बहुत संक्षेप में मनुष्य, समाज और राष्ट्र के निर्माण का एक छोटा–सा तरीका बताया। यंग इण्डिया समाचार पत्र के 22 अक्टूबर,1925 के अंक में गांधी जी द्वारा गिनाये गये 7 सामाजिक पापों की सूची प्रकाशित हुई। उन्होने इन 7 पापों का उल्लेख किया – सिद्धान्त विहीन राजनीति, कर्मविहीन धन, आत्मा के बिना सुख, चरित्र के बिना धन, नैतिकता विहीन व्यापार, मानवीयता विहीन विज्ञान और त्याग विहीन पूजा, जिनसे बचना चाहिए ।

गांधीजी के अनुसार नैतिकता, अर्थशास्त्र, राजनीति और धर्म अलग–अलग इकाइयां हैं पर इन सबका उद्देश्य एक ही है और वह है सर्वोदय। राजनीति अगर लक्ष्यहीन और आदर्शों पर टिकी नहीं है तो वह पवित्र नहीं हो सकती। इसी प्रकार अनुचित साधनों से बिना परिश्रम कमाया गया धन, एक प्रकार से चुराया हुआ धन है। गांधी जी का आत्मा से अभिप्राय मन की उस आवाज से है, जो गलत और सही का विवेक प्रदान करती है। इसी तरह ऐसा विज्ञान जो मानवता के विपरीत कार्य करे वह वरदान नहीं अभिशाप है।

महात्मा गांधी ने खुद पूरा जीवन त्याग की मूर्ति बनकर गुजारा। अहिंसा बापू द्वारा दिया गया वह मंत्र है जिसमें विश्व शांति की पूरी संभावना छिपी हुई है।

साफ सुथरी छवि के कारण लाल बहादुर शास्त्री जी को 9 जून, 1964 में देश का प्रधानमन्त्री बनाया गया। उनके शासनकाल में 1965 में भारत पाक युद्ध हुआ। इससे तीन वर्ष पूर्व चीन का युद्ध भारत हार चुका था। शास्त्रीजी ने अप्रत्याशित रूप से हुए इस युद्ध में राष्ट्र को उत्तम नेतृत्व प्रदान कर पाकिस्तान को करारी शिकस्त दी। इसकी कल्पना पाकिस्तान ने कभी सपने में भी नहीं की थी। ताशकन्द में पाकिस्तान के प्रधानमंत्री अयूब खान के साथ युद्ध समाप्त करने के समझौते पर हस्ताक्षर करने के बाद 11 जनवरी, 1966 की रात में ही रहस्यमय परिस्थितियों में उनकी मृत्यु हो गयी। सादगी, देशभक्ति और ईमानदारी के लिये मरणोपरान्त शास्त्री जी को भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

तत्समय खाद्यान्न की कमी को दृष्टिगत रखते हुए शास्त्री जी ने देश की जनता का आहवान किया कि वे सप्ताह में एक दिन का व्रत रखे ताकि उपलब्ध खाद्यान्न अधिक समय तक चल सके एवं किसानों के आत्मविश्वास में वृद्वि हो सके। सेना के मनोबल को बढाने तथा सीमित संसाधनों के बावजूद युद्व में जीत प्राप्त करने का श्रेय शास्त्री जी को ही जाता है। इन्ही के आधार पर शास्त्री जी ने जय जवान–जय किसान का नारा दिया।

आज दो अक्टूबर को उनके जन्मदिवस पर मैं दोनों महापुरूषों को अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि देते हुए नमन करता हूं।

धन्यवाद। जयहिन्द।